साबरमती आश्रम का कायाकल्प

चर्चा में क्यों :– हाल ही में प्रधानमन्त्री ने साबरमती आश्रम के कायाकल्प की घोषणा की। साथ ही साबरमती आश्रम पुनर्विकास और विस्तार का शिलान्यास किया.

"पूज्य बापू का ये साबरमती आश्रम हमेशा से ही एक अप्रतिम ऊर्जा का जीवंत केंद्र रहा है. हर किसी को जब-जब यहां आने का अवसर मिलता है, तो बापू की प्रेरणा हम अपने भीतर स्पष्ट रूप से अनुभव कर सकते हैं. सत्य, अहिंसा का आदर्श हो, राष्ट्र आराधना का संकल्प हो, गरीब और बंचित की सेवा में नारायण सेवा देखने का ख्वाब हो साबरमती आश्रम बापू के इन मूल्यों को आज भी सजीव किए हुए हैं."

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी

यह घोषणा 12 मार्च को की गई जिसका इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान रहा है हमें पता है की चौबीस(24) दिवसीय मार्च था जिसका प्रारंभ 12 मार्च 1930 को हुआ था.. इसमें 6 अप्रैल 1930 तक साबरमती आश्रम से दांडी नामक स्थान तक पैदल जाना था।। दांडी यात्रा या नमक सत्याग्रह , सविनय अवज्ञा आंदोलन में औपनिवेशिक भारत में ब्रिटिश नीतियों का अहिंसक तरीके से विरोध करने का एक कार्यक्रम था । इस मार्च का उद्देश्य :– ब्रिटिश नमक एकाधिकार के खिलाफ प्रतिरोध और अहिंसक विरोध के प्रत्यक्ष कार्रवाई अभियान के रूप में। 12 मार्च, 2022 को साबरमती आश्रम से देश ने आजादी के अमृत महोत्सव का शुभारंभ किया था.

कोचरब आश्रम :– गांधीजी के दक्षिण अफ्रीका से लौटने के बाद भारत में उनका प्रथम आश्रम 25 मई, 1915 को अहमदाबाद के कोचरब क्षेत्र में स्थापित किया गया था। इस आश्रम को ही 17 जून, 1917 को साबरमती के किनारे खुली जमीन के भूभाग पर स्थांतरित कर दिया गया। गाँधी जी नें आश्रम स्थापित करने अपने दक्षिण अफ्रीका प्रवास से लिया था. हमें पता है की गांधीजी ने दक्षिण अफ्रीका में अपने प्रवास के दौरान फीनिक्स आश्रम की स्थापना की।

फीनिक्स फॉर्म : दक्षिण अफ्रीका - गांधी जी ने इस आश्रम या फार्म की स्थापना करने के लिए पहले कार्यकर्ताओं से बातचीत की फिर अखबार में विज्ञापन विज्ञापन दिया जिसके बाद डरबन से 13 मील दूर जमीन खरीदी पहले 20 एकड़ भूमि को लिया बाद में 80 एकड़ जमीन खरीदी गई ।
दक्षिण अफ्रीका में कई भारतीयों ने भी इसमें सहयोग दिया । इस तरह 1904 में यह आश्रम स्थापित किया गया।

टॉलस्टॉय फॉर्म : दक्षिण अफ्रीका- 1910 में टॉलस्टॉय फार्म की स्थापना । यह जोहानिसबर्ग से 21 मील दूर स्थित।टॉलस्टॉय फॉर्म 1100 एकड़ में फैला , इस फॉर्म के लिए भूमि दोस्त हरमन कालेनबाख ने दान में दिया। फार्म का नाम रूसी विचारक और लेखक लियो टॉलस्टॉय के नाम पर रखा गया।

भितिहरवा आश्रम : बिहार- 27 अप्रैल 1917 को गांधी जी नील किसानों के लिए आंदोलन करने पश्चिम चंपारण के भितिहरवा गांव पहुंचे। यह बेतिया से 65 किलोमीटर है। यहां एक बाबा रामनारायण दास ने गांधी जी को आश्रम के लिए जमीन प्रदान की । इस पर ही 16 नवंबर 1917 को एक पाठशाला और एक कुटिया बनाई गई। इस प्रकार भितिहरवा आश्रम की स्थापना हुई।

2 पीएम सूरज पोर्टल

चर्चा में क्यों :– केंद्र सरकार के द्वारा कई प्रकार की योजनाओं का संचालन किया जा रहा है इसी के तहत हाल ही में सूरज पोर्टल का भी शुभारंभ किया गया

सूरज पोर्टल :– यह पोर्टल एक राष्ट्रीय पोर्टल है।पोर्टल का उद्देश्य :– सामाजिक उत्थान , रोजगार और जनकल्याण ।
इस पोर्टल के जरिए ऋण सहायता स्वीकृत की जाएगी। पोर्टल के माध्यम से पात्र लोगों को ऋण लेने में सुविधा होगी। इस पोर्टल के जरिए लोग 15 लाख रुपये तक के बिजनेस लोन के लिए आवेदन कर सकेंगे।

पीएम सूरज पोर्टल उद्धेश्य :–

1.समाज के सबसे वंचित वर्गों का उत्थान करना और उनका सशक्तिकरण करना। 2.पीएम सूरज पोर्टल के अंतर्गत पात्र लोगों को बैंक, गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों, सूक्ष्म वित्त संस्थान और अन्य संगठनों के जरिए ऋण दिया जाएगा।

3 फ्रांस के राष्ट्रपति ने 'हेल्प टू डाई' विधेयक का समर्थन किया।

फ्रांसीसी राष्ट्रपति ने चिकित्सकीय सहायता से मृत्यु की अनुमति देने वाले विधेयक को समर्थन प्रदान किया। अगर यह विधेयक पारित होता है तो फ्रांस लाइलाज बीमारी (टर्मिनली इल) वाले पीड़ित व्यक्तियों के लिए इच्छामृत्यु (Euthanasia) को वैध घोषित करने वाला यूरोपीय देश बन सकता है। इससे पहले अन्य यूरोपीय देशों ने भी इस प्रकार के विधेयक को अनुमति दी है

इच्छामृत्यु :– इसको मर्सी किलिंग के नाम से भी जाना जाता है। इसके माध्यम से रोगी को पीड़ा से मुक्ति दिलाने के लिए उसके जीवन का अंत करने का एक तरीका बताया जाता है । यह किसी भी व्यक्ति की धीमी, दर्दनाक या असम्मानजनक मृत्यु होने देने के बजाय, 'सम्मान के साथ मरने' में उसकी सहायता प्रदान करती है।

इच्छामृत्यु के प्रकार :– इसके 2 प्रकार होते है

सक्रिय (Active) इच्छामृत्युः– इस प्रकार की इच्छामृत्यु की अनुमति नीदरलैंड, बेल्जियम, कनाडा जैसे देशों में प्राप्त है। इसके तहत किसी व्यक्ति के जीवन को समाप्त करने के लिए चिकित्सक द्वारा प्रयास किया जाता है। जैसे :– घातक पदार्थ या बाह्य हस्तक्षेप (रोगी को जानलेवा इंजेक्शन देना) । निष्क्रिय (Passive) इच्छामृत्युः इस तरह की इच्छामृत्यु की अनुमति ऑस्ट्रिया, फिनलैंड, नॉर्वे जैसे देशों में है।
इसके तहत जीवन समर्थक उपकरणों या उपचार को हटा या रोक दिया जाता है।

इच्छामृत्यु के पक्ष में तर्कः

1.लोगों को आत्मनिर्णय का अधिकार है, और इस प्रकार उन्हें अपना भाग्य चुनने की अनुमति दी जानी चाहिए

2.किसी विषय को मरने में सहायता करना यह अपेक्षा करने से बेहतर विकल्प हो सकता है कि वे कष्ट सहते रहें

3.इलाज करवाने से इंकार करने की लिविंग विल को लागू करना किसी व्यक्ति की व्यक्तिगत स्वतंत्रता सुनिश्चित करने के लिए जरूरी है।

इच्छामृत्यु के विपक्ष में तर्क:

1.मानव जीवन के महत्त्व को कम करता है, किसी के जीवन का अंत करना स्वाभाविक रूप से गलत और अनैतिक है।

2.यह नर्सिंग, देखभाल, उपचार आदि से जुड़ी चिकित्सकीय नैतिकता के खिलाफ है।

भारत में इच्छामृत्यु को लेकर कानूनी स्थिति:–

वर्तमान में भारत में इच्छामृत्यु से जुड़ा कोई कानून उपलब्ध नहीं ।'भारत में सुप्रीम कोर्ट मात्र निष्क्रिय इच्छामृत्यु की अनुमति प्रदान करता है।

भारत में इच्छामृत्यु से संबंधित महत्वपूर्ण न्यायिक निर्णय:

1. अरुणा शानबाग बनाम भारत संघ (2011) वाद: इसमें सुप्रीम कोर्ट ने पहली बार निष्क्रिय इच्छामृत्यु की अनुमति दी।

2.कॉमन कॉज बनाम भारत संघ (2018) वाद: इस मामले में सुप्रीम कोर्ट ने निर्णय दिया था कि यदि कोई व्यक्ति चिरस्थायी जड़ता (Persistent vegetative state) से ग्रसित है, तो वह व्यक्ति निष्क्रिय इच्छामृत्यु का विकल्प चुन सकता है। साथ ही, कोर्ट ने यह भी कहा कि गरिमा के साथ मरना संविधान के अनुच्छेद 21 के तहत एक मौलिक अधिकार है।

4 :– नीति आयोग ने ' समुद्री राज्यों में मत्स्य पालन की संभावनाओं का दोहन करना' विषय पर राष्ट्रीय कार्यशाला की मेजबानी की

भारत में मत्स्य क्षेत्र की स्थिति:

भारत वैश्विक स्तर पर तीसरे सबसे बड़े मछली उत्पादक के रूप में और दूसरे सबसे बड़े एक्वाकल्चर उत्पादक के रूप में जाना जाता है ।

एक्वाकल्चर :– एक्वाकल्चर को एक्वाफार्मिंग के रूप में भी जानते हैइसके अंतर्गत जलीय जीवों (मछली, क्रस्टेशियंस, मोलस्क, शैवाल) तथा जलीय पौधों (जैसे कमल) जैसे जीवों की नियंत्रित खेती की जाती है।

संयुक्त राष्ट्र के कृषि विभाग के अनुसार :–

एक्वाकल्चर (जलीय कृषि) :– जलीय पौधों और पशुओं का उत्पादन करना और जलीय कृषि कहलाता है।इस व्यवसाय के अंतर्गत सामान्यतः मछली उत्पादन करते है इसके साथ ही सीप और झींगा कृषि को भी शामिल किया जाता है, परंतु पारंपरिक रुप से इन्हे एक्वाकल्चर का हिस्सा नहीं माना जाता।

भारतीय में नीली क्रांति के दौरान मछली उद्योगों और एक्वाकल्चर उद्योगों में काफी तरक्की देखने को मिली है।
 इन उद्योगों को सनराइज़ सेक्टर्स के रूप में जाना जाता है साथ ही आने वाले समय में भारतीय अर्थव्यवस्था पर इसका और बड़ा प्रभाव पड़ने की उम्मीद है।

भारतीय मत्स्य पालन ने हाल ही में नए कीर्तिमान स्थापित किए यह वर्ष 1980 के दशक के मध्य मछली उत्पादन में 36% से हाल के दिनों में 70% के साथ प्रमुख योगदानकर्ता बन गया है। भारत में वित्त वर्ष 2021-22 के दौरान मछली उत्पादन में कुल उत्पादन 16.25 मिलियन मीट्रिक टन के सबसे उच्च स्तर पर पहुँच गया और मुद्रा के तौर पर 57,586 करोड़ रुपए मूल्य का समुद्री निर्यात किया गया।

टैंक और तालाब

भारत में लगभग 2.36 मिलियन हेक्टेयर टैंक और तालाब क्षेत्र हैं जहां कल्चर आधारित मात्स्यिकी प्रमुख है और कुल मत्स्य उत्पादन में अधिकतम हिस्सेदारी का योगदान देता है। टैंकों और तालाबों से वर्तमान में उत्पादन 8.5 मिलियन मीट्रिक टन है।

 उत्पादन की दिशा में एक प्रमुख योगदानकर्ता के रूप में, विभाग ने 13.5 मिलियन मीट्रिक टन के लक्ष्य उत्पादन को प्राप्त करने के लिए टैंकों और तालाबों के क्षैतिज क्षेत्र का विस्तार करने को प्राथमिकता दी है।.

भारत में मछली उत्पादक शीर्ष राज्य:

भारत में पश्चिम बंगाल मछली उत्पादक में प्रथम स्थान पर है इसके बाद आंध्र प्रदेश फिर गुजरात और केरल।